

पर्यावरण पर दक्षिण-एशियाई देशों का सहयोग

यह एडिटरियल 16/05/2022 को 'हदुस्तान टाइम्स' में प्रकाशित "South Asian Nations must Collaborate on Climate" लेख पर आधारित है। इसमें जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में दक्षिण एशियाई देशों के बीच सहयोग के दायरे के संबंध में चर्चा की गई है।

संदर्भ

दक्षिण-एशिया में क्षेत्रीय सहयोग से उम्मीदें तो की गईं लेकिन इसके परिणाम इष्टतम नहीं रहे हैं। जारी जलवायु संकट इस दिशा में एक आदर्श बदलाव लाने के महत्वपूर्ण अवसर के रूप में कार्य कर सकता है।

- दक्षिण एशिया कई जलवायु चुनौतियों का सामना कर रहा है, हालाँकि चुनौतियों की समानता और राष्ट्रों की अनुपूरक शक्तों के साथ ही उनके साझा भूगोल, सामाजिक आर्थिक विशेषताएँ और संस्कृतिक दक्षिण एशियाई देशों के बीच सहयोग के अवसर भी प्रदान कर रहे हैं।
- इस भू-भाग को [सतत विकास लक्ष्यों](#) (SDGs) को आगे बढ़ाने के अपने प्रयासों को दोगुना करने की ज़रूरत है। भारत जलवायु प्रत्यास्थता कार्यक्रमों को संयुक्त रूप से डिज़ाइन, वित्तपोषित और कार्यान्वित करने हेतु अंतरराष्ट्रीय विकास एजेंसियों के साथ सहयोग कर इसमें एक योगदान कर सकता है जहाँ अन्य दक्षिण एशियाई देश भारत की विकास सहायता का लाभ उठा सकते हैं।

दक्षिण एशिया और जलवायु परिवर्तन

उत्सर्जन में दक्षिण एशिया की हसिसेदारी

- वैश्विक आबादी के लगभग एक चौथाई भाग के साथ यह भू-भाग ऐतिहासिक वैश्विक ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन के 4% के लिये ज़िम्मेदार है।
- वर्ष 2019 में इसका वार्षिक प्रतिव्यक्ति GHG उत्सर्जन 6 टन CO₂ समतुल्य था, जो विश्व स्तर पर किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में न्यूनतम था, जबकि वर्ष 2020 में प्रतिव्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (क्रय शक्ति समता) 5,814 डॉलर था, जो विश्व स्तर पर अफ्रीका के बाद सबसे कम था।

दक्षिण एशिया पर प्रभाव

- दक्षिण एशियाई देश जलवायु परिवर्तन प्रभावों के संदर्भ में वैश्विक स्तर पर सबसे कमज़ोर/संवेदनशील देशों में शामिल हैं।
 - चरम जलवायु संबंधी घटनाएँ हर साल क्षेत्र की आधी से अधिक आबादी को प्रभावित करती हैं और दक्षिण एशियाई देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर बोझ डालती रहती हैं।
 - विश्व में न्यूनतम ऊँचाई पर स्थित देश (Lowest Lying Country) मालदीव इसी भूभाग में स्थित है जिस पर नकिट भवष्य में डूब जाने का खतरा मंडरा रहा है।
- [IPCC की AR6 रिपोर्ट](#) ने दक्षिण एशिया के लिये चिंताजनक अनुमान प्रकट किये हैं। इसमें कहा गया है कि अगले दो दशक में ग्लोबल वार्मिंग में लगभग 5 °C की वृद्धि के साथ यह भूभाग गर्म मौसम, दीर्घकालिक मानसून और सूखा की घटनाओं में वृद्धि का सामना करेगा।
 - 21वीं सदी की कालावधि में दक्षिण एशिया में [ग्रीष्म लहर](#) (Heatwaves) और आर्द्र हीट स्ट्रेस (humid heat stress) की अधिक तीव्र और आवर्ती स्थिति रहेगी।
- विश्व बैंक के अनुसार, पिछले दशक में कम से कम एक जलवायु संबंधी आपदा से लगभग 700 मिलियन लोग (दक्षिण एशिया की आबादी की लगभग आधी) प्रभावित हुए हैं।
- 'जर्मनवाच' (Germanwatch) के ['ग्लोबल क्लाइमेट रसिक इंडेक्स 2020'](#) में 21वीं सदी में जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित 20 देशों में भारत और पाकिस्तान को भी रखा गया है।
- मैकनिसे ग्लोबल इंस्टीट्यूट की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि जलवायु प्रभाव वर्ष 2050 तक दक्षिण एशियाई देशों के सकल घरेलू उत्पाद को 13% तक नष्ट कर सकता है।

क्षेत्रीय सहयोग के संबंध में संबद्ध चुनौतियाँ

- **पर्यावरणीय मुद्दों पर एकमतता का अभाव:** पर्यावरण संबंधी प्रमुख नरिणयों पर आम सहमतिका नरिमाण एक चुनौती बनी हुई है। हवा, भूमिगत जल जलभृत और जैव वविधिता जैसे महत्त्वपूर्ण साझा संसाधन प्रायः अनरिंतरित बने हुए हैं।
 - एक क्षेत्रीय बजिली व्यापार तंत्र (regional electricity trading mechanism), जो नवीकरणीय ऊर्जा के युग में महत्त्वपूर्ण साबति हो सकता है, के लिये लगातार बदलती योजनाएँ राजनयकि कड़वाहट का वषिय रही हैं।
 - जलवायु परिवर्तन पर सार्क कार्य योजना (SAARC Action Plan on Climate Change) और वर्ष 2008 में ढाका में दक्षिण एशियाई पर्यावरण मंत्रियों की संयुक्त घोषणा जैसे आशाजनक कषणों को भी जलद ही भुला दिया गया।
- **भू-राजनीत की चुनौतियाँ:** हाल की भू-राजनीत के उतार-चढ़ाव के साथ दक्षिण एशिया का मूल वचिर ही नष्ट हो गया है। चीन के आर्थिक प्रभुत्व और इस क्षेत्र में नए गठबंधनों ने भारत, पाकस्तान, बांग्लादेश और नेपाल जैसे पड़ोसी देशों के बीच तनाव की वृद्धि की है।
 - प्रतीत होने लगा है कि सार्क जैसी संस्थाएँ अपनी पूर्वस्थिति में नहीं लौट सकेंगी।
- **सीमा संबंधी समस्याएँ:** राष्ट्रीय सीमाओं की मनमानी प्रकृति ने जलवायु परिवर्तन को प्रबंधित करना कठिन बना दिया है। वे राजनीत से नरिधारित होते हैं और प्रायः पारस्थितिकि सीमाओं और ग्रहीय प्रणालियों की पूरी तरह से उपेक्षा करते हैं।
 - दक्षिण एशिया की कठोर सीमाएँ, जनिहें 20वीं सदी के मध्य में जलदबाजी में परभाषति कयिा गया था, 21वीं सदी की समस्याओं के लिये अनुपयुक्त हैं।

आगे की राह

- **अपर्युक्त ऊर्जा संसाधनों का उपयोग:** अफगानस्तान, भूटान, भारत, नेपाल और पाकस्तान जैसे हिमालय क्षेत्र के देशों में वृहत अपर्युक्त जलवदियुत संसाधन मौजूद हैं।
 - प्रौद्योगिकियों एवं वतित के वषिय में सहयोग और एक साझा दक्षिण एशियाई बजिली बाज़ार के विकास से ऊर्जा सुरक्षा में वृद्धि हो सकती है, जबकि साथ ही बजिली लागत और GHG उत्सर्जन में कमी आएगी।
 - सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भारत की बढ़त अन्य देशों को भी सस्ते और प्रमुख ऊर्जा स्रोत के रूप में इस नवीकरणीय संसाधन के विकास में मदद दे सकती है।
- **संभावित क्षेत्रों में क्षेत्रीय सहयोग:** जलवायु संकट की चुनौतियों और वर्तमान पहलों के आधार पर पाँच प्रमुख वषियों में क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया जा सकता है:
 - संवहनीय/सतत शहरीकरण (Sustainable Urbanisation)- समावेशी संवहनीय नगरनकिया सेवाएँ, हरति परिवहन, प्रदूषण उपशमन एवं रोकथाम।
 - जलवायु-कुशल कृषि (Climate-smart Agriculture)- जल एवं संसाधन दक्षता, खाद्य की बर्बादी को न्यूनतम करना, परिवहन लॉजिस्टिक्स एवं कोलड चेन और खाद्य प्रसंस्करण।
 - आपदा प्रत्यासथता (Disaster Resilience)- जलीय-मौसम वजिज्ञान संबंधी घटनाओं के लिये संयुक्त एवं समन्वित पूर्व-चेतावनी प्रणाली, तटीय क्षेत्रों में रसायन एवं तेल रसाव, जंगल की आग सहति वभिनिन आपदाओं के लिये साझा प्रतिक्रिया तंत्र।
 - नवीकरणीय एवं स्वच्छ ऊर्जा (Renewable and Clean Energy)- सौर एवं पवन ऊर्जा, बजिली भंडारण प्रौद्योगिकियों, जल-वदियुत परियोजनाओं का संयुक्त विकास, क्षेत्रीय ऊर्जा बाज़ार और उद्योगों, खेतों, संस्थानों, कार्यालयों एवं घरों में ऊर्जा दक्षता की वृद्धि करना।
 - 'डाउनस्केलड क्लाइमेट मॉडलिंग' (Downscaled Climate Modelling) – लघु-आवधकि से लेकर दीर्घावधकि प्रभावों का आकलन करने और जन-उन्मुख अनुकूलन योजनाओं को लागू करने के लिये।
- **नजी क्षेत्र की भागीदारी:** जलवायु अनुकूलन और शमन में नजी क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी।
 - इस प्रकार, प्रत्यक्ष वदिशी नविश नयिमों में छूट से वशिष रूप से हरति प्रौद्योगिकियों, डजिटिल फर्मों, उद्योगों प्रौद्योगिकियों, अपशषित प्रबंधन एवं उपचार, आपदा प्रत्यासथता बढ़ाने वाली प्रक्रियाओं, और प्रौद्योगिकियों (जलवायु-प्रत्यासथी सड़कों और जल परिवहन जैसे अवसंरचना क्षेत्रों में उपयुक्त प्रौद्योगिकियों सहति) के लिये मदद मलिंगी।
- **सार्क जलवायु कोष:** भूभाग के देश एक सार्क जलवायु कोष (SAARC Climate Fund) भी स्थापति कर सकते हैं जो नवाचारों, संयुक्त अनुसंधान एवं विकास, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, ज्ञान के आदान-प्रदान और क्षमता नरिमाण पर प्रमुखता से ध्यान देने के साथ अनुकूलन एवं शमन पहलों के लिये धन की पूरति कर सकता है।
 - यह कोष नजी फाउंडेशनों एवं व्यक्तियों, कॉरपोरेट सामाजकि उत्तरदायतिव (CSR) पहलों और द्वपिकषीय एवं बहुपक्षीय एजेंसियों से भी धन जुटा सकता है।
- **जलवायु शक्तिषा:** जलवायु शक्तिषा समुदायों को ग्लोबल वार्मिग के प्रभाव को समझने एवं इन्हें संबोधति करने, व्यवहार परिवर्तन को प्रोत्साहति करने और उन्हें जलवायु परिवर्तन के अनुकूल बनाने में मदद करेगी।
 - राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में जलवायु शक्तिषा को शामिल करने से दक्षिण एशियाई देशों के बच्चों एवं युवाओं को आवश्यक ज्ञान एवं कौशल के साथ एक हरति, संवहनीय एवं जलवायु-प्रत्यासथी भवषिय के नरिमाण के लिये सशक्त कयिा जा सकेगा।

अभ्यास प्रश्न: जलवायु परिवर्तन दक्षिण एशियाई देशों के बीच सहयोग के अवसरों में से एक साबति हो सकता है। चर्चा कीजिये।